## Media Coverage

6 नईदुनिया
जबलपुर, मंगलवार 15 फरवरी, 2022
महाकोशल-विंध्य

# बैंबू सिटम में बांस की 46 प्रजातियों को संरक्षण

**जबलपुर (नईदुनिया प्रतिनिधि)।** बांस एक महत्वपूर्ण पौधा है, जिसका उपयोग औषधी के रूप में भी होता है और इसके गुणों के कारण इसे प्राकृति वायु शोधक भी माना गया है। ऐसे ही बहुउपयोगी बांस की विभिन्न प्रजातियों के संरक्षण का कार्य ट्रापिक्ल फारेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट टीएफआरआइ में किया जा रहा है, जहां टीएफआरआइ के करीब डेढ़एकड़के क्षेत्र में बैंबू सिटम यानी जहां बांस की विभिन्न प्रजातियों को एकित्रत करके रोपा गया है। बैंबू सिटम का उद्देश्य देश भर में बांस की जितनी भी प्रजातियां पाई जाती हैं उनका एक स्थान पर संरक्षण करना है। इस उद्देश्य की पूर्ति करते हुए अभी तक देश भर में पाई जाने वाले 46 तरह के बांस के पौधे यहां लगाए जा चुके हैं।

## टीएफआरआइ में करीब डेढ़ एकड़ क्षेत्र में रोपे गए हैं देश भर से लाए गए बांस के पौधे

बैंबू सिटम की संयोजक व एचओडी जीटीआइ विभाग डा. फातिमा शिरीन ने बताया कि चीन के बाद भारत दूसरा बड़ा देश है जहां बांस का उत्पादन अधिक होता है। वर्तमान में शासन द्वारा भी बांस को संरक्षित करने व इससे बनने वाले उत्पादों को बढ़ावा देने का प्रयास हो रहा है। इस बैंबू सिटम में असम, मेघालय, ओडिशा, महाराष्ट्र, कर्नाटक, मध्यप्रदेश के विभिन्न स्थानों से लाई गई बांस की अलग-अलग प्रजातियों को रोपा गया है। इसके अलावा भी टीएफआरआइ परिसर में अधिकांश तौर पर बांस लगाकर इसका संरक्षण किया जा रहा है। बैंबू सिटम में भालूका बांस, कटंग बांस, बर्मा, इंडियन टिंबर, टालन, थाई सिल्क, माल, नारंगी, देव, जाटी, बुद्धास बैली से लाए बांस, कामन बांस, पीला, लोटा, बालन, जायंट, वेलवेट लीफ, टामा, भालू, लांग शीथ, लाठी, अंडमान वेल बांस, स्वीट बैंबू, कोलंबियन टिंबर, बैरी, हाथी, क्लंपिंग, इंग्लिश, असमी, काला, बिजली, तीर, मरिहल, सफेद, गैंवल, एवरग्रीन बांसों की प्रजातियों को लगाया गया है।

इसके साथ ही टीएफआरआइ द्वारा स्वसहायता समूहों के सदस्यों को बांस के विभिन्न सजावटी उत्पादों को बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। जिससे लोग बांस की कलाकृतियों को बनाना सीखें और स्वरोजगार से जुड़ सकें।

◆◆◆◆◆◆◆◆◆◆